महाकाव्य की परिभाषा में एक और नायक, मनोभाव, कथा, सूर्योदय, संध्या, ½तुओं तथा पर्वतों तथा दूसरी ओर नगरों, विवाहों, यु¼ों आदि के वर्णन के विषय में नियमों का विधान किया गया है जिससे मानव जीवन का सम्पूर्ण चित्र विविधता तथा विस्तार के साथ महाकाव्य में उतर सके।

महाकाव्य की परिभाषा का दूसरा भाग उसके बाह्य आकार या रूप से, जो प्रथम भाग की अपेक्षा गौण है, सम्बद्ध है, जैसेः महाकाव्यों में सर्गों की संख्या का निर्धारण तथा एक सर्ग में एक ही छन्द के प्रयोग का विधान आदि। महाकाव्य के विषय में आचार्य दण्डी का कथन समीचीन है किः

''न्यूनमप्यत्र यैः कैश्चिदङ्गैः काव्यं न दुष्यति'' (काव्यादर्श 1.20)

(अर्थात् महाकाव्य में उपर्युक्त परिभाषा में से कुछ अंगों की कमी भी हो तो भी उसमें दोष नहीं माना जाता।)

इस प्रकार दण्डी के मत में, महाकाव्य के उपयुक्त नियमों में से कुछ नियमों की कमी भी रह जाये तो भी वह ग्राह्य है, उसमें दोष नहीं आता।

रघुवंश में सर्वप्रथम अद्भुत बात यह है कि इस काव्य के पात्रों में से हम किसी एक को इसका नायक नहीं कह सकते। प्रत्युत वैवस्वत मनु के वंश में जन्म लेने वाले अनेक प्रतापी सम्राट् इसके नायक हैं। दिलीप, रघु, राम जैसे यशस्वी नरेशों में धीरोदात्त नायक के सभी गुण जैसेः साहस, संयम, औदार्य आदि विद्यमान हैं।

रघुवंश की कथा सुप्रसिद्ध है तथा रामायण और पुराणों से ग्रहण की गई है। यह कथा अत्यन्त रोचक होने के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी है क्योंकि इसमें स्त्री पुरुष सभी प्रकार के पात्रों के जीवन के विविध रूपों में चित्रण करते हुए उनके उत्थान और पतन के कारणों पर भी प्रकाश डाला गया है। जिस राजवंश ने अनेक महान् और आदर्श

राजाओं को जन्म दिया, उसी के अन्तिम उत्तराधिकारी को बहुत दुर्बल और विलासी चित्रित किया गया है।

इस काव्य का अंगी अर्थात् प्रधान रस तो श्रृंगार है परन्तु अन्य रसों का-जैसे रघु के दिग्विजय के प्रसंग में वीर, अजविलाप में करुण, रघु के सन्यास में शान्त तथा सरयू नदी के जल में से कुमुद के आविर्भाव में अद्भुत रस का प्रयोग भी प्रशंसनीय तथा प्रभावोत्पादक है। इस प्रसंग में ''राइडर'' महोदय की निम्नलिखित उक्ति ध्यान देने योग्य है: हमें रघुवंश को ऐसा काव्य समझना चाहिये जिसमें नैसर्गिक कथा की अपेक्षा उसमें आई अकेली घटनाओं का पाठक पर अधिक प्रभाव पड़ता है। रघुवंश में प्रकृति तथा सामाजिक जीवन के विभिन्न रूपों के वर्णनों की प्रचुरता है। जैसे: 13वें सर्ग में समुद्र तथा प्रयाग स्नान में गंगा, यमुना नदियों के संगम का वर्णन, चौथे सर्ग में रघु की दिग्विजय, सातवें सर्ग में इन्दुमती का स्वयंवर, दसवें सर्ग में आखेट विहार तथा 16वें सर्ग में उजड़ी हुई अयोध्या के वर्णन विशेष रूप से उल्लेख के योग्य हैं।

इस महाकाव्य का आरम्भ मंगलाचरण से होता है जिसमें कवि जगत् के माता पिता भगवान् शिव और भगवती पार्वती को प्रणाम करके उनके प्रति अपनी भक्ति व्यक्त करता है। जैसाकि पहले भी उल्लेख किया जा चुका है, रघुवंश के 19 सर्ग हैं जिनमें कवि ने एक पूरे सर्ग में एक ही छन्द का प्रयोग किया है, केवल सर्ग के अन्तिम श्लोक में परिवर्तन के उद्देश्य से भिन्न छन्द का प्रयोग किया है। इन सर्गों के अन्त में परिवर्तन के उद्देश्य से प्रयुक्त कालिदास के प्रिय छन्द हैं: अनुष्टुप, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वंशस्थ, मालिनी, वसन्ततिलका तथा पुष्पिताग्रा। सम्पूर्ण महाकाव्य में भाषा मधुर तथा सरल है। यह विविध अलंकार से विभूषित है जिनमें ''उपमा'' अलंकार प्रमुख है। कालिदास में भाषा को अलंकारों से लादने की प्रवृत्ति नहीं है इसके विपरीत वे शब्दालंकारों का तो बहुत कम प्रयोग करते हैं और अर्थालंकारों का भी अलंकारों का भी

अलंकारों के प्रदर्शन के उद्देश्य से नहीं अपितु रस और भाव-पोषण के लिए ही प्रयोग करते हैं। कालिदास की भाषा काव्य के गुणों:'प्रसाद' और 'माधुर्य' से सुशोभित है और इस कारण से उनकी काव्यशैली 'वैदर्भी' मानी जाती है।

इन विशिष्ट गुणों के कारण ही रघुवंश को महाकाव्य का एक आदर्श उदाहरण माना जाता है और इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि संस्कृत के आलोचकों ने इसके मूल्य को परखते हुए इसकी प्रशस्ति में यहां तक कह दिया है कि: **''क इह रघुकारे न रमते।''** अर्थात् कौन है जो रघुकार—रघुवंश के लेखक महाकवि कालिदास द्वारा रचित महाकाव्य में आनन्द से झूम नहीं उठता?